"संवेदनशील लोकतान्त्रिक और न्यायप्रिय समाज"

एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन

वार्षिक रिपोर्ट -2013

C/O Ajeet Bahadur, 950/625 Muthiganj, Allahabad, Uttar Pradesh-211003

E-mail: extraanorganization@yahoo.com

Mob: +91 8127254051, +91 9695907532, +91 9452401478

विवरण

नाटक डैडलॉक के कागजात तैयार करना नाट्य उत्सवों में भेजने के लिए

बच्चों का नाट्य समूह बनाना एवं संस्था सदस्यों की क्षमता वर्धन

नाट्य अनुवाद

ICCR की सदस्यता के लिए अवेदन तैयार करना

कार्यलाय किड्गंज से मुठिगंज शिफ्ट करना

इस वर्ष की चुनौतियाँ

एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन

(एक्सपेरिमेंटल थिएटर इन रियलिस्टिक एट्टीट्यूड)

परिचय : एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन (एक्सपेरिमेंटल थिएटर इन रियलिस्टिक एट्टीट्यूड) की नीव कई वर्षों के सघन चर्चा एवं विचारों के संघर्षों से गुज़रते हुए सन 2002 के 23 जनवरी को कलकत्ता में रखी गयी। संस्था की नीव की सिचाई में कला एवं रंगमंच कार्यकर्ता रिक्शा चालक साथी –इलाहाबाद, बूट मरम्मत कर्ता साथी-कोलकाता एवं रवीद्र भारती विश्वविध्यालय –कोलकाता, भारतेन्दु नाट्य अकेडमी-लखनऊ और फिल्म एण्ड टेलीविज़न इंस्टीट्यूट-पुणे में अध्ययन रत छात्र रहे हैं। एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन (एक्सपेरिमेंटल थिएटर इन रियलिस्टिक एट्टीट्यूड) अपने *मिशन "संवेदनशील लोकतान्त्रिक और न्यायप्रिय समाज"* की संकल्पना के साथ वचनबद्ध रहा है।

संस्था अपने मिशन की ओर बढने और इसकी प्राप्ति के लिए कला और संस्कृतियों की विविधिता से आभूषित भारत के पारंपरिक कला और यहाँ की संस्कृतियों के आधार पर रंगमंच के नए सौंदर्यशात्रीय प्रतिमान रचने में इसके शोध और खोज में लगातार व्यस्त रहता आ रहा है। इस रंगमंचीय प्रतिमान को समाज में स्थापित करने के लिए हम निरंतर हमारी प्रक्रियामयी प्रस्तुतियों से दर्शक और अभिनेता के बीच की दूरियों को लगातार कम करने की कोशिश में हैं। क्योकि हमें ऐसा लगता है की किसी नाटक का उत्पाद मात्र से नहीं बल्कि नाटक और रंगमंच के अंदर व्याप्त जीवन मुखी शाश्वत प्रक्रियाएँ हमें हमारे मिशन "संवेदनशील लोकतान्त्रिक और न्यायप्रिय समाज" तक पहुंचा सकेंगी।

संस्था की मुख्य रंगमंच प्रस्तुतियों में कुछ निम्न नाटक जिनका प्रस्तुति निम्न अंतर्राष्ट्रीय महोत्सवों में हुईं जैसे सर्वेश्वर दयाल सक्सेना द्वारा लिखित 'हवालात' राष्ट्रिय नाट्य विध्यालय दिल्ली द्वारा आयोजित भारत रंग महोत्सव -2009, अंतोन चेखोव द्वारा लिखित 'टेढ़ा दर्पण' राष्ट्रिय नाट्य विध्यालय दिल्ली द्वारा आयोजित भारत रंग महोत्सव -2010 तथा नेशनल थिएटर फेस्टिवल-केरला -2010 में, एवं धर्मवीर भारती द्वारा लिखित उपन्यास 'सूरज का सातवाँ घोडा' राष्ट्रिय नाट्य विध्यालय दिल्ली द्वारा आयोजित भारत रंग महोत्सव -2011 एवं चेन्नई भारत रंग महोत्सव। इसके साथ ही साथ संस्था देश के अलग-अलग हिस्सों राजस्थान, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश में रंगमंच की टोलियों का निर्माण और कार्य भी कर

रही एवं अनुभव इकत्र कर चुकी है। संस्था राष्ट्रिय स्तर पर कार्य करने हेतु नई दिल्ली से सन 2007 के 27 दिसम्बर को 'एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन' के नाम से रजिस्टर किया है।

दृष्टिकोण

एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन अपने दृष्टिकोण में यह मानता है की भारत की पारंपरिक रंगमंच एवं लोक शैलियों शोध कर नए अभिनय शैलियों और नाट्य शैलियों के साथ नए सौदर्यशाष्त्रीय प्रक्रियाओं का निर्माण करना। यह सौदर्यशाष्त्रीय प्रतिमान हमें हमारे मिशन की प्राप्ति का निर्मित होता मार्ग है। इस मार्ग के निर्माण के लिए राष्ट्रीय और इच्छुक अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं और रंगकर्मियों तक हमें अपने प्रक्रिया रंगमंच विधियों के साथ पहुँचना और इनका प्रस्तुति परक प्रसार।

इस प्रसार के लिए हम अलग –अलग राज्यों के नाट्य एवं कला दलों तथा पारंपरिक संगीत टोलियों तक पहुँच रहे हैं जैसे : बीकानेर, राजस्थान में जन जागृति संस्था जो की एक नाट्य संस्था है , पश्चिम बंगाल के हुगली में आर्ट फ़ाउंडेशन ऑफ द एरा एवं जयपुर के दृश्य कला समूह अरविंद तथा बीकानेर के सुफी संगीत गायकों के साथ मिल कर हम अपने मिशन को साझा कर रहे हैं ताकि हमारी सब की इस मिशन *"संवेदनशील, लोकतान्त्रिक और न्यायप्रिय समाज"* के गठन की यात्रा में कला अपने कार्यवाहकों के साथ आगे आए।

लक्ष्य

एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन अपने मिशन *"संवेदनशील लोकतान्त्रिक और न्यायप्रिय समाज"* की प्राप्ति के लिए निम्न लक्ष्यों की ओर बढ़ रही है जो की इस प्रकार हैं। मिशन के अनुरूप एक ऐसा रूप विषयक (मॉडल) सामुदायिक स्तर पर "बहुउद्देशीय सांस्कृतिक ग्राम" का निर्माण आगामी 2020 तक करना चाहती है। जहां शिक्षा, कला एवं रंगमंच में निरंतर प्रयोग और उनका स्थापन होता रहेगा संवेदनशील ,लोकतान्त्रिक और न्यायप्रिय समाज के निरंतर निर्माण के लिए इसके लिए भावी वर्तमान और आगंतुक पीढ़ियों के साथ इस प्रक्रिया का स्थापन हमें अतिआवश्यक महसूस होता रहा है। लक्ष्यों के कुछ निम्न बिन्दु इस प्रकार हैं:

- **सामुदायिक स्तर पर "बहुउद्देशीय सांस्कृतिक ग्राम" का निर्माण के लिए बंजर भू-खंड खोजना और स्थानीय अथवा राज्य स्तरीय प्रशासनों से चर्चा**
- **सामुदायिक स्तर पर "बहुउद्देशीय सांस्कृतिक ग्राम" का निर्माण**
- **बहूद्देशीय सांस्कृतिक ग्राम के निर्माण के लिए चर्चाएँ चलाना राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर**
- **मॉडल के स्थापना के साथ ही साथ इस सामुदायिक स्तर पर "बहुउद्देशीय सांस्कृतिक ग्राम" का विस्तार अन्य राज्यों में।**

उद्देश्य

एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन अपने मिशन तक पहुँचने के लिए जो भी लक्ष्य रूपी मार्ग तैयार कर रहा है। उसके लिए रंगमंच के क्षेत्र में निम्न प्रकार के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कार्यरत है ।

- स्थानीय एवं अन्य राज्यीय कला एवं रंगकर्मियों तक पहुँचना
- अंतर्राष्ट्रीय रंगकर्मियों से निरंतर संवाद एवं अपने रंगविधियों एवं विचारों का साझा
- नाट्य प्रक्रिया कार्यशालाओं के तहत स्थानीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर रंगकर्मियों का निर्माण
- ज़्यादा से ज़्यादा दर्शकों तक पहुँचना और उनकी वैचारिक भागीदारी सुनिश्चित करना

कार्यनीतियां

एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन अपने मिशन तक पहुँचने के लिए जो भी लक्ष्य रूपी मार्ग तैयार कर रहा है। उसके लिए रंगमंच के क्षेत्र में उद्देश्यों की पूर्ति के लिए निम्न कार्यनीतियों पर कार्यरत है ।

- संस्था के नाट्य प्रक्रिया प्रस्तुतियों का निर्माण उभर रहे निर्देशकों के द्वारा
- नाट्य उत्सवों में भागीदारी
- नाट्य प्रक्रिया कार्यशालाएँ
- दर्शक-अभिनेता संवाद
- रंगमंच एवं समाज पर स्थानीय वाकपीठों का आयोजन

नाट्य उत्सवों में भेजने के लिए नाटक डैडलॉक के कागजात तैयार करना

नाटक डैडलॉक को नाट्य उत्सवों में भेजने के लिए इसका दस्तावेजीकरण किया गया , इस नाटक को अंतर्राष्ट्रीय उत्सवों में भेजा गया है।

इस नाटक को पुनः निर्माण करने के लिए हम योजनयों पर कम कर करे हैं। इस वर्ष फाइनाइन्सियल स्रोतो एवं स्वयं सहायता करने की स्थिति में दल के समूह अभी जूझ रहे हैं। आशा है की अगले माह से जो नया वर्ष 2014 आ रहा है। इस वर्ष हम डैडलॉक नाटक या संस्था की अन्य प्रस्तुतियों को विभिन्न जगह करें ताकि कुछ स्रोत प्राप्त हो सके।

संस्था के कार्यकारिणी समिति भी दूसरे NGO एवं नाट्य संस्थायोन में जाकर उनकी कारयाशलाएँ करवा रहे हैं। इन कार्यशालायों से प्राप्त स्रोत से आगामी वर्ष 2014 में रंगमंच के दर्शकों के साथ कार्यशाला करने की योजना है।

बच्चों का नाट्य समूह बनाना

संस्था के कार्यालय पर जो हमारा पूर्वाभ्यास का स्थल पर ही किड्गंज के आस-पास के बच्चों के साथ निरंतर इंगेजमेंट रखा जा रहा है। यह इंगेजमेंट धीरे-धीरे बच्चों के नाट्य समूह के रूप में उभरेगा ऐसा अनुमान है। इन बच्चों के साथ स्टोरी टेलिंग पर कार्य किया जा रहा है।

आगामी वर्ष ही इन बच्चों के समूह पर हम हाई ईंटेंसिटी का कार्य कर रहे होंगे।

संस्था सदस्यों की क्षमता वर्धन

रहे होंगे। संस्था के सदस्यों का ग्रुप मानेजमेंट एवं रंगमंच के क्षेत्र खास कर –कालारी पाएट , क्लाओन अभिनाय एवं सामाजिक विज्ञान के अवधारनाओं पर कार्य किया जा रहा है।

इसके साथ ही साथ राजकुमार और उनके साथी रंगमंच की कहनी पर पठन सामाग्री तैयार कार्य कर रहे हैं। इस पठन सामाग्री में विभिन्न समाजों एवं सदी में रंगमंच की अवधारणाओं को खोज रहे हैं। इस वर्ष 2013 पूरा वर्षा लगभग बहुत ही अकेडेमिक वर्ष रहा है।

नाट्य अनुवाद

फ्लेम यूनिवर्सिटी, पुणे के प्रोफेसर आशुतोष पोतदार जी द्वारा लिखित मराठी नाटक "पुला खल्चा मरूती" का हिन्दी में अनुवाद भी संस्था कर रही है। इस नाटक के निर्माण के लिए संस्था के सदस्य पुणे जाकर श्रीमान आशुतोष जी से मुलाकात कर इस नाटक को निर्माण करने की योजना बनाई जाएगी।

इस नाटक का निर्माण कार्य संभवतः 2014 के मार्च माह से शुरू हों सकेगा।

ICCR की सदस्यता के लिए आवेदन तैयार करना

ICCR की सदस्यता लेने के लिए इस वर्ष इसका आवेदन दिल्ली से लेकर इलाहाबाद तक कोशिश किया गया। अब इस वर्ष NCZCC से फोर्वर्डिंग पत्र प्राप्त करने की आशा है। NCZCC को पुनः यह आवेदन जमा किया जाना है।

कार्यलाय किड्गंज से मुठिगंज शिफ्ट करना

इस वर्ष जून माह में हमें किड्गंज से कार्यालय को मुठिगंज शिफ्ट करना पड़ा क्योकि वहाँ के ज़मीन मालिक ने उस ज़मीन को बेंच दिया। संस्था के अध्यक्ष द्वारा सुझाए गए स्थान पर जहां हम पहले भी पूर्वाभ्यास एवं निर्माण का कार्य करते थे। अब एक्सट्रा एन ऑर्गनाइज़ेशन का कार्यलय भी मुठिगंज में हमने शिफ्ट किया। अब भविष्य के सभी पत्राचार यहा के पते पर ही होने हैं।

इस वर्ष की चुनौतियाँ

होनेइस वर्ष की चुनौतियों से जुझने के लिए संस्था सदस्यों ने अपने कार्य की गति और भी ज़्यादा बढ़ा दी है। इस वर्ष के जैसी चुनौतियों से सामना करने के लिए हम इस वर्ष और भविष्य के आगंतुक वर्षों में भी हम अपने क्षमता वर्धनों (रंगमंचीय कौशलों एवं सामाजिक विज्ञान विषयों) पर सूक्ष्म आध्यन करते रहेंगे।

इस वर्ष की निम्न चुनौतियाँ:

- ❖फाइननैन्सियल स्रोतों का अभाव।
- ❖इस वर्ष दूसरे कार्यशालायों से स्रोत इक्कठा न हो पाना।
- ❖यात्राओं का ना हो पाना।